JAIN REFERENCE LIBRARY ACHARYA SURENDRASURI JAIN TATVA GYANSHALA Page 1/2

अहमदाबाद में चौमासा किया। उस समय वहाँ खान मुहब्बत दिल्ली बादशाह का सूबेदार था जिसे कवि ने बड़ा त्यागी और दानी बताया है, यथा–

आदेस तस रह्या आदरे चोमासु अमदाबाद।
महा खान मुहब्बते राजवी, तिहां राइ रे गाजे जस वाद।[1]

उसके व्यवहरिया रतनसी सुत मूलजीपारेख के आग्रह पर उदय-समुद्र ने यह रचना की थी। इसमें रचनाकाल नहीं है। कमलहर्ष का समय ज्ञात है इसलिए यह रचना इसी के आसपास की होगी इसीलिए सं० १७२८ पर देसाई जी ने प्रश्नवाचक चिह्न लगा दिया है। जैन गुर्जर कवियो भाग २ पृ० २६८-७० पर सं० १७२८ और भाग २ पृ० ५६० पर सं० १७८६ दिया गया है।

कवि ने लिखा है कि कुलध्वज की कथा कौतूहल कथा के साथ पुण्य कथा भी है इसलिए इसमें सोने में सुगन्ध के समान सौन्दर्य है, यथा–

पुण्यकथा कौतिक कथा, अके सोनुं ने सुगन्ध।

उदयसागर सूरि– इस नाम के दो कवि प्रमुख रूप से हुए हैं, प्रथम १७वीं शती में वर्णित हैं। प्रस्तुत उदयसागर विजयगच्छ के विजयमुनि>धरमदास>खेमराज>विमलसागर सूरि के शिष्य थे। इनकी रचना का नाम है––

मगसी पार्श्वनाथ स्तवन (५९ कड़ी) इसके अन्त में उपरोक्त गुरु-परम्परा दी गई है। इसका कलश निम्नवत् है––

इय पास सामी सिद्धिगामी मालव देसइं जाणीयइ,
मगसिय मंडण दुरितखंडण नाम हियडइ आणीयइ।
श्री उदयसागर सूरि पाय प्रणमइ अहनिसि पास जिणंद अे,
जिनराज आज दया दीठ वुं मन हुवइ आणंद अे।[2]

---

१. मोहनलाल दलीचंद देसाई – जैन गुर्जर कवियो भाग २ पृ० २६८-२७० और भाग ३ पृ० १२७१ और १४५० (प्र० सं०)।
२. वही, भाग ५ पृ० ३७१ (न० सं०) और भाग २ पृ० ५६८ (प्र० सं०)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Mo. 9512234311 www.jainreferencelibrary.org jaintatvagyanshala@gmail.com

JAIN REFERENCE LIBRARY ACHARYA SURENDRASURI JAIN TATVA GYANSHALA Page 2/2

उदयसिंह – ये सदारंग के शिष्य थे। इन्होंने आश्विन शुक्ल १० सं० १७६८ में 'महावीर चौढालिया' की रचना किशनगढ़ में की।[1] सदारंग नागोरीगच्छ के साधु थे।[2] इस रचना का उद्धरण नहीं मिल पाया।

उदयसूरि – ये खरतरगच्छीय बेगड़शाखा के गुणसमुद्र सूरि के प्रशिष्य और जिनसुंदर सूरि के शिष्य थे। खरतरगच्छ में जिनोदय-सूरि के समय सं० १४२२ में जब धर्मविलास आचार्य पद पर थे तभी बेगड़ शाखा चली थी। इसके पट्टधरों में जिनशेखर>जिनधर्म>जिनचन्द्र>जिनमेरु>जिनगुण>जिनेश्वर>जिनचन्द्र>जिनसमुद्र आदि सूरि गुणसमुद्र से पूर्व हो चुके थे। उदयसूरि ने सं० १७१९ श्रावण में 'सुरसुंदरी अमरकुमार रास' की रचना की। इस रास में रचना का समय इस प्रकार बताया गया है –

संवत उगणोत्तर श्रावण मासि, अेह रच्यो उलासे,
वेगड खरतर गच्छ विराजे, गुणसमुद्र सूरि गाजै।
वर्त्तमान गुरुगच्छ वडइ, श्री जिनसुंदर सुरिंदा,
श्री उदैसूरि कर जोड गावे, सुख सम्पत्ति सदा।[3]

उगणोत्तर का अर्थ देसाई ने १९ लिया है किन्तु श्री अ०च० नाहटा ने इसका रचनाकाल सं० १७६९ बताया है[4]।

ऋषभदास—कल्याण शिष्य; आपकी तीन रचनाओं का पता चलता है—

(१) २३ पदवी स्वाध्याय (१८ कड़ी सं० १७७२ चौमासा गगडाण)
आदि –'गणधर गौतम स्वामी जी समरी श्रुतदातारो रे।

(२) श्रावक नाम वर्णन (१५ कड़ी सं० १७८५ चौमासा गगडाण)

---

१. अगरचंद नाहटा – परंपरा पृ० ११४।
२. मोहनलाल दलीचन्द देसाई – जैन गुर्जर कविओ भाग ३ पृ० १४२२ (प्र० सं०) और भाग ५ पृ० २६७ (न० सं०)।
३. वही, भाग २ पृ० १८६–१८७ (प्र० सं०)।
४. अगरचन्द नाहटा परंपरा पृ० १०८।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Mo. 9512234311 www.jainreferencelibrary.org jaintatvagyanshala@gmail.com